INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' मे वर्णित सामाजिक विसंगतियों का अध्ययन

(Study of social anomalies described in Omprakash Valmiki's autobiography 'Jhootan')

Veerpal
Student,
JCD Vidyapith Sirsa (Haryana, India)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2023-52531854/IRJHIS2307005

प्रस्तावना -

"साहित्य समाज का दर्पण है", ये उक्ति चरितार्थ करती है जो कुछ समाज में घटित होता है उसका प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर हमेशा पड़ता है। साहित्यकार अपने समाज से तटस्थ कभी नहीं हो सकता। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में साहित्यकारों द्वारा आत्मकथा लेखन की परम्परा नयी है। इस श्रृंखला की नयी कड़ी के रूप में ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा लिखी गई आत्मकथा "जूठन" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य के अग्रणीय रचनाकार है। दलित समाज और परिस्थितियों को लेखक ने न केवल देखा ही है बल्कि उसके दु:ख सुख को भली भांति जिया भी है। उनके लेखन में दलित जीवन के अनुभव संघर्ष जिजीविषा समानता बंधुत्व व भाईचारे की भावना को निरुपित करती हुई दिखाई पड़ती है। दलित जीवन के विभिन्न आयामों को परस्तुत करने वाली इन कहानियों में मानवीय सरोकारों और सवेदनाओ को महता दी गई है। निश्चित तौर पर ओमप्रकाश वाल्मीकि की पीड़ा, दर्द, संघर्ष यथार्थ को प्रकट करती है। दलित चेतना को जानने से पूर्व हमें सर्वप्रथम यह जान लेना आवश्यक है की 'दलित' शब्द है क्या ? यह शब्द किस वर्ग जाति के संदर्भ में प्रयोग किया जाता रहा है। शब्दकोशों में दलित शब्द का अर्थ दलन या दमन किया हुआ मसला हुआ, रौंदा हुआ, कुचला हुआ, सताया हुआ आदि प्राप्त हुआ है। अर्थात् भारतीय समाज में दलित शब्द उन वर्गो के लिए प्रयोग होता रहा है। जो अधूत है, अंत्यज है, अस्प्रश्य है व् शोषित है।

दलित चेतना के आदोंलन को जन्म देने में कई व्यक्तियों का योगदान रहा है। प्राचीन समय में जहां गौतम बुद्ध ने इस अमानवीय व्यवस्था को नकारते हुए इसमें सुधार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया, तो वही भक्तिकाल के कवियों में भी यह आंदोलन एक अलग दृष्टि के रूप में दिखाई पड़ता है। इस क्रम में वही बीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में ज्योतिबा फूले और डा.भीमराव अम्बेडकर के संघर्षों व विचारों के रूप में एक अलग आंदोलन का निर्माण होता

है। जहां डा० भीमराव अम्बेडकर का जीवन संघर्ष दलितों में एक नई चेतना का सूत्रपात करते हुए उन्हें एक नई दिशा देते दिखाई पड़ता है। हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। दलित साहित्य कविताएं आत्मकथा, आलोचना, कहानिया उपन्यासों की रचना है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में सामाजिक विसंगतियो का नग्न चित्रण प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में दलित समाज के प्रति मर्म स्पर्शी संवेदना और पूंजीपति वर्ग जमींदार वर्ग ब्राह्मण वर्ग मनुवादी संस्कारो के प्रति आक्रोश की भावना दृष्टिगोचर होती है। जूठन आत्मकथा में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कल्पना को दर किनार करते हुए बिना डरे बिना समाज की परवाह किये बिना परम्परागत रूढ़िगत विसंगतियों का यर्थात चित्रण किया है ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित होने का जो दंश झेला है वह उनकी आत्मकथा में देखने को मिलता है। दलितों की जीवन दशा में व्याप्त अमानवीय और कुरुर समस्याओं का इनमें स्वाभाविक चित्रण होता है। इसी सन्दर्भ में शरण कुमार लिबाले अपनी पुस्तक दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र में लिखते है –"दलित साहित्य में 'नकार और विद्रोह' दलितों की वेदना के गर्भ से पैदा हुआ है यह नकार अथवा विद्रोह अपने ऊपर लादी गई अमानवीय व्यवस्था के विरुद्ध है। धार्मिक और सामाजिक तौर पर अस्पृश्य होने के बावजूद भी सवर्ण समाज दलित महिलाओं का शोषण करते रहे। इस तरह की घटनाओं का जिक्र लगभग सभी दलित आत्मकथा में एक बेवस स्त्री की दयनीय दशा का मार्मिक चित्रण किया गया है। आत्मकथा में अनेक ऐसे प्रसंगो का उल्लेख हुआ है। जिसमे दलित स्त्री की पीड़ादायक जीवन दशा के विविध आयामों का चित्रण हुआ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के सम्पूर्ण साहित्य में स्त्री वेदना दृष्टिगोचर होती है। यह स्पष्ट है की स्त्री जीवन सहज नहीं है बल्कि वह परिवार, समाज, कार्यक्षेत्र आदि विभिन्न स्थानों पर लिंग भेद, जाति भेद, गरीबी, अशिक्षा, अनेक सामाजिक कुरूतियों के बहाने प्रताड़ित होती हैं। आत्मकथा में अनेक ऐसे प्रसंगो का उल्लेख हुआ है जिनमें दलित स्त्री की पीड़ादायक जीवन दशा के विविध आयामों का चित्रण हुआ है। 'दलित' साहित्य और स्त्री चित्रण पर भवरलाल मीणा से बातचीत के दौरान ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं की "यदि स्त्री की वेदना को दलित साहित्य नहीं समझ रहा है तो उसका एक पक्ष कमजोर हुआ है दलित साहित्य का जो एक वेसिक कोंसेप्ट है उसके अंतर्गत है जिसको कहना चाहिए आंतरिक चेतना है उसमें ये फिट नहीं बैठेंगे तो दलित साहित्य कैसे हो सकता है ? नहीं हो सकता है इसलिए ओमप्रकाश वाल्मीकि के सम्पूर्ण साहित्य में स्त्री वेदना दृष्टिगोचर होती है।

'जूठन' आत्मकथा लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि भी ऐसे ही शूद्र या दलित जाति से संबंध रखते है जिसे शूद्रो में भी अति शूद्र या दलितों में अति – दलित माना जाता है। भारतीय इतिहास के मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के माध्यम से दलित जातियो के प्रतिनिधि कबीर हिंदू वर्ण-व्यवस्था और मुस्लिम स्तर भेद के लिए दोनों समुदायों को

धिक्कारते है-

"जो तूं ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया, आन बाट काहे नहीं आया।

जो तू तुरुक तुरुक्की जाया, अंदर खतना क्यूँ न कराया॥"

सम्पूर्ण दलित जीवन की तस्वीर उकेरने वाली यह आत्मकथा दलित साहित्य जगत की अमूल्य निधि है। जाति व्यवस्था के अंतर्गत निम्नस्तरीय समझी जाने वाली भंगी जाति में उनका जन्म हुआ। यह बस्ती गावं की मुख्य बस्ती से दूर और वेहद गंदी बस्ती थी। इनकी बस्ती के ही पास लोग शौच कर्म के लिए जाया करते थे। उच्च जाति के लोगों के द्वारा उनकी पूरी बिरादरी को निम्न और तुच्छ समझा जाता था और इनसे अपमानजनक व्यवहार भी किया जाता था। यहां तक दुर्भावना से ग्रस्त लोगों ने इनकी पिटाई भी की ताकि स्कूल जाना छोड़ दे। इनके अलावा शिक्षकों द्वारा भी इनके साथ भेदभाव और दुर्व्यवहार किया जाता था। वर्ण व्यवस्था भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही स्वीकृत रही है। इसके पीछे समाजिक कार्यों को विभाजित करने का उदेश्य रहा है। परिवार इन्हीं कार्यों की वजहों से आगे के दिनों में जाति के नाम से जाना जाने लगा सामाजिक कार्य इसी रूप में जातिवाचक बनकर भारत में जातिवाद के फैलने का कारण बना कार्य करने वाले के प्रति घोर सामाजिक अन्याय करना भारतीय समाज से शुरू हो गया। सामाजिक अन्याय साथ–साथ इन्हें अस्पृश्य कहकर घोर अपमानित किया गया। उन्हें सभी अधिकारों से वंचित कर दिया गया। सामाजिक ,आर्थिक ,राजनितिक विकास से इन्हें दूर रखा गया। उनके मानवीय अधिकार छिनकर उन्हें गुलाम समझते हुए नारकीय जीवन जीने के लिए विवश कर दिया गया चमार, चाडाल , डोम आदि नामो से पुकार कर उनके श्रम का शोषण करना शुरू कर दिया गया। उन्हें मंदिर तथा स्वर्ण वर्गो के मोहल्ले में प्रवेश करने से मना कर दिया गया। अन्य सामाजिक वर्गो के सामने सर उठा कर चलने की मनाही के साथ साथ ऐसा ना करने पर दंड का प्रावधान भी किया गया। हम कह सकते है की जूठन आत्मकथा में सामाजिक प्रतिरोध शाब्दिक ही नही है।

निष्कर्ष –

हम कह सकते है की जूठन आत्मकथा में सामाजिक प्रतिरोध शाब्दिक ही नही है अपितु चेतना के स्तर पर वह आक्रोश भी पैदा करता है। अम्बेडरवादी चेतना से निर्मित सामाजिक प्रतिरोध यह ध्वनि इस बात की भी प्रतीक है की जिस शोषण को सदियों से नियति मान कर दलित समुदाय झेलता आया था आज उसके खिलाफ चेतना जागृत होने लगी है। ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित समुदाय की पीड़ा उनके शोषण तथा साथ ही उनकी आकांक्षाओं के वाहक बनते है। जूठन के माध्यम से वाल्मीकि इस बात पर जोर देते है की जाति श्रेष्टता किसी की योग्यता का मानक नही हो सकता मानव मुक्ति की लड़ाई में जूठन मील का पत्थर साबित होने वाली आत्मकथा है।

सन्दर्भ-

1. "ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यक्ति, विचारक और सृजक, संपादक- जयप्रकाश कर्दम, वाणी प्रकाशन, पृष्ट -29

2. डॉ. शर्मा पवन कुमार, दलित चेतना और हिंदी उपन्यास,

3. ओमप्रकाश वाल्मीकि (आत्मकथा), जूठन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

4. समाज की विसंगतिया, इंटरनेट से- http@www-igntu.ac.in